अध्याय 1

भारतीय अर्थव्यवस्था का स्वरुप

इस अध्याय में आप सीखेंगे कि:

- आर्थिक प्रणाली का अर्थ क्या है तथा आर्थिक प्रणाली के प्रकार।
- आर्थिक संवृद्धि और आर्थिक विकास के मध्य संबंध।
- विकास के लिए संवृद्धि आवश्यक है।

परिचय (Introduction)

आर्थिक प्रणाली को ऐसी व्यवस्था के रूप मे परिभाषित किया जा सकता है जिसमे अर्थव्यवस्था की केन्द्रीय समस्याओं को हल किया जाता है। आर्थिक प्रणाली सामान्यत: तीन प्रकार की होती है—पूँजीवादी, समाजवादी व मिश्रित।

आर्थिक प्रणाली के प्रकार (Types of Economy)

आर्थिक प्रणाली तीन प्रकार निम्नवत् है—

1. पूँजीवादी अर्थव्यवस्था (Capitalist Economy)
2. समाजवादी अर्थव्यवस्था (Socialist Economy)
3. मिश्रित अर्थव्यवस्था (Mixed Economy)

पूँजीवादी अर्थव्यवस्था

अर्थ एवं विशेषतायें—पूँजीवादी अर्थव्यवस्था सम्पत्ति तथा निजी लाभ पर आधारित राजनैतिक प्रणाली है। इस प्रणाली में, कीमतो का निर्धारण मांग तथा पूर्ति की बाजार शक्तियों द्वारा किया जाता है। इस प्रकार की प्रणाली को स्वंतत्र बाजार प्रणाली भी कहते है। यह प्रणाली उत्तरी अमरीका के देशों, जापान, आस्ट्रेलिया, पश्चिमी यूरोपीय देशो मे उपस्थित है। पूँजीवादी अर्थव्यवस्था की विशेषताएं इस प्रकार हैं—

- **सम्पत्ति पर निजी स्वामित्व**—पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में, उत्पादन के सभी साधन (जैसे—भूमि, मजदूर, पूँजी तथा संगठन आदि) निजी क्षेत्र द्वारा खरीदे तथा प्रबंधित किए जाते हैं। सभी उपयोगिताओ तथा आधारभूत सुविधाओ पर निजी फर्मो का स्वामित्व होता है।
- **उद्यमों की स्वतंत्रता**—पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में प्रत्येक व्यक्ति अपनी इच्छानुसार कार्य का चयन कर सकता है। व्यक्ति बचत तथा निवेश के चयन के लिए भी स्वतंत्र होते हैं।
- **लाभ के उद्देश्य से उत्पादन**— पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में निजी फर्म केवल लाभ अर्जन के एकमात्र उद्देश्य से निर्देशित होती है। ये आर्थिक क्रियाओं तथा जोखिम वहनता को प्रोत्साहित करती है। इसका परिणाम संसाधनों का कुशलतम उपयोग होता है।
- **कीमत संयंत्र उत्पादन के निर्णयों को निर्देशित करती है**—पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में, कीमत संयंत्र, उत्पादन निर्णयों को निर्देशित करती है। जैसे—क्या उत्पादन करना है? कितना उत्पादन करना है? और कैसे उत्पादन करना है? कीमत संयंत्र एक प्रक्रिया है जहाँ कीमतों का निर्धारण माँग तथा पूर्ति बाजार की शक्तियों द्वारा किया जाता है। यह संतुलित कीमत होती है तथा इसमें सरकार का कोई हस्तक्षेप नहीं होता। व्यक्ति अपने स्व-कल्याण को अधिकतम करने के लिए स्वतंत्र होते हैं। इस प्रकार, समाज के कल्याण में वृद्धि होती है। कीमत संयंत्र मे 'कीमते' उत्पादकों को निर्णय लेने में सहायता करती है कि उन्हें किस वस्तु का उत्पादन करना है तथा यह उपभोक्ताओं को सहायता करती है कि उन्हें किस वस्तु का उपभोग करना है।

- **प्रतियोगिता की उपस्थिति**—पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में प्रतियोगिता की उपस्थिति होती है। प्रतियोगिता तथा कीमत संयंत्र उत्पादकों एवं उपभोक्ताओं की सभी क्रियाओं को कुशल एवं इष्टतम ढंग से समन्वित करते हैं।
- **उपभोक्ता सर्वोपरि हैं**—पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में, उपभोक्ता की प्राथमिकताएँ उत्पादन को निर्देशित करती हैं। इसे उपभोक्ता की प्रभुसत्ता कहा जाता है। उपभोक्ता अपनी इच्छा एवं पसंद से उपभोग करने के लिए स्वतंत्र होते हैं।
- **आय का असमान वितरण**—पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में, उत्तराधिकारी का अधिकार होता है अर्थात् कानूनी तौर पर, स्वामी की मृत्यु के बाद पुत्र सम्पत्ति का मालिक बन जाता है।
- **सरकार की भूमिका की अनुपस्थिति**—सरकार निजी उद्यमों की कार्यप्रणाली में कोई हस्तक्षेप नहीं करती। यहाँ कोई केंद्रीय नियोजन प्रणाली नहीं होती। प्रत्येक क्रिया का निर्धारण कीमत संयंत्र द्वारा होता है।

पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के लाभ—पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के मुख्य लाभ इस प्रकार हैं—

- **आर्थिक क्रियाओं को प्रोत्साहन**—सभी फर्में तथा व्यक्ति **लाभ** के उद्देश्य का अनुसरण करते हैं, जिससे पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में आर्थिक क्रियाओं को बढ़ावा मिलता है।
- **अधिकतम कुशलता**—पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के अंतर्गत, अधिकतम कुशलता होती है क्योंकि प्रतियोगिता बहुत कड़ी होती है। बाजार में केवल वही रह सकते हैं, जो न्यूनतम लागत पर उत्पादन कर सकते हैं तथा न्यूनतम कीमत पर विक्रय कर सकते हैं।
- **गतिशील अर्थव्यवस्था**—पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में, खोजें तथा आविष्कार लगातार होते रहते हैं, जिससे अर्थव्यवस्था मे गतिशीलता बनी रहती है।
- **लगातार आर्थिक विकास**—पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में उत्पादन, निवेश, रोजगार सृजन जैसे क्षेत्रों में वृद्धि बहुत तेजी से होती है। जिससे व्यक्तियों का जीवन स्तर ऊँचा होता है।

पूँजीवादी अर्थव्यवस्था की हानियाँ—कार्ल मार्क्स के अनुसार, 'पूँजीवाद की अपनी हानियां हैं।' पूँजीवादी अर्थव्यवस्था की कुछ हानियां इस प्रकार हैं—

- **आय तथा धन का असमान वितरण**—पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में, आय तथा धन का असमान वितरण होता है इसलिए उत्पादन, निर्धन समाज की आवश्यकताओं की अपेक्षा धनी समाज की माँग से अधिक प्रभावित होता है। ऐसी असमानता नैतिक, आर्थिक, सामाजिक तथा राजनैतिक दृष्टिकोण से अनैच्छिक होती है। समाज दो वर्गों में बँट जाता है-धनी तथा निर्धन। इनके बीच की दूरी निजी या पैतृक सम्पत्ति के कारण और बढ़ती जाती है। इससे वर्ग संघर्ष तथा निर्धनों का शोषण आरंभ हो जाता है।
- **व्यावसायिक अस्थिरता**—सरकार की कोई भूमिका न होने पर उत्पादन का निर्णय उद्यमियों द्वारा लिया जाता है। इसके परिणामस्वरूप अति उत्पादन, अल्प उत्पादन तथा व्यावसायिक अस्थिरता उत्पन्न होती है।
- **उपभोक्ता का शोषण**—पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में एकाधिकारियों के साथ अनुकूल पक्षपात किया जाता है, जिनका एकमात्र उद्देश्य लाभ को अधिकतम करना होता है। एकाधिकारी कम उत्पादन के लिए अधिक कीमत लेकर उपभोक्ताओं का शोषण करता है।
- **उत्पादन के संसाधानों का अनुचित आबंटन**—पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में, संसाधनों का आबंटन वहीं किया जाता है, जहां लाभ अधिकतम होता है, जिससे सामाजिक कल्याण नहीं होता। इसका परिणाम सामान्यत: उत्पादक संसाधनों का अनुचित आबंटन होता है।

समाजवादी अर्थव्यवस्था

अर्थ एवं विशेषताएँ—समाजवादी अर्थव्यवस्था सम्पत्तियों पर सार्वजनिक स्वामित्व तथा सामाजिक कल्याण के उद्देश्य पर आधारित एक नियोजित अर्थव्यवस्था है। कीमतों का निर्धारण केंद्रीय नियोजन प्राधिकरण द्वारा किया जाता है। समाजवादी अर्थव्यवस्था हंगरी, यूगोस्लाविया, बुलगारिया आदि देशों में है। समाजवादी अर्थव्यवस्था की प्रमुख विशेषताएं इस प्रकार हैं—

- **सम्पत्ति तथा उत्पादन के साधनों पर सार्वजनिक स्वामित्व**—समाजवादी अर्थव्यवस्था में उत्पादन के साधनों पर समाज का स्वामित्व होता है। विभिन्न उद्यमों द्वारा कमाया गया लाभ राज्य के पास आता है, जहाँ इन्हें समाज कल्याण के उद्देश्यों के लिए प्रयोग किया जाता है।
- **उद्यमियों को कोई स्वतंत्रता नहीं**—समाजवादी अर्थव्यवस्था में, उद्यमियों को उत्पादन संयोग के चयन की कोई स्वतंत्रता नहीं होती। केंद्रीय प्राधिकरण यह निर्णय करता है कि उसके द्वारा निर्धारित सामाजिक एवं आर्थिक उद्देश्यों के लिए क्या, कितना तथा किसके लिए उत्पादन करना है।
- **समाज कल्याण का उद्देश्य**—समाज कल्याण ही उत्पादन क्रियाओं का एकमात्र आधार है। इसलिए संपूर्ण आय राज्य को प्राप्त होती है, ताकि वह समाज के कल्याण के लिये धन का आबंटन कर सके।
- **नियोजन संयंत्र उत्पादन को निर्देशित करता है**—कीमत संयंत्र को नियोजन संयंत्र से बदल दिया जाता है। केंद्रीय प्राधिकरण यह निर्णय करता है कि क्या, कितना तथा किसके लिए उत्पादन करना है। उत्पादन के संसाधनों पर सरकार का स्वामित्व होता है तथा सरकार के पास सभी बड़े आर्थिक निर्णय लेने का अधिकार होता है।
- **कोई प्रतियोगिता नहीं**—समाजवादी अर्थव्यवस्था में लाभ उद्देश्य न होने के कारण प्रतियोगिता को कोई प्रोत्साहन नहीं मिलता।
- **उपभोक्ता प्रभुसत्ता की अनुपस्थिति**—समाजवादी प्रणाली में उपभोक्ता 'क्या उपभोग करना है?' के निर्णय के लिए आत्मनिर्भर नहीं होता। वह केवल उन्हीं वस्तुओं का उपभोग कर सकता है, जिनका उत्पादन सरकार द्वारा किया जाता है।

- **व्यवसाय की स्वतंत्रता पर बाध्यता**—समाजवादी अर्थव्यवस्था में, देश के सभी नागरिकों को काम के समान अवसर प्रदान किए जाते हैं।
- **आय की असमानता में कमी**—समाजवादी अर्थव्यवस्था में, प्रत्येक व्यक्ति के लिए काम होता है। आय में अंतर कार्य की प्रकृति तथा कार्य की क्षमता के कारण होता है। आय की असमानता को कम करने के लिए बहुत से प्रयास किए जाते हैं। आर्थिक असमानता कम हो जाती है, क्योंकि निजी सम्पत्ति पर कोई अधिकार नहीं होता।
- **सरकार की पूर्ण भूमिका**—केंद्रीय नियोजन प्राधिकरण पूर्व निर्धारित उद्देश्यों तथा अधिकतम समाज कल्याण के उद्देश्यों की प्राप्ति के अनुसार संसाधनों का आवंटन करता है। केंद्रीय नियोजन प्राधिकरण यह निर्णय लेता है कि क्या, कैसे और किसके लिए उत्पादन करना है।

समाजवादी अर्थव्यवस्था के लाभ—समाजवादी प्रणाली के कुछ लाभ इस प्रकार हैं—

- **संसधानों का इष्टतम उपयोग** —समाजवादी अर्थव्यवस्था में सभी मानवीय एवं प्राकृतिक संसाधानों का इष्टतम उपयोग होता है। उत्पादन समाज कल्याण के उद्देश्य से होता है न कि लाभ अर्जन के उद्देश्य से। अर्थव्यवस्था में सभी क्षेत्रों के विकास के प्रयास किए जाते हैं। पूँजीवादी अर्थव्यवस्था की कमियों, जैसे—व्यावसायिक उच्चावचन सट्टा, अनिश्चितता, आदि स्थितियाँ समाजवादी अर्थव्यवस्था में नही पायी जाती।
- **उपभोक्ता आवश्यकताओं की संतुष्टि**—चूँकि वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन समाज की आवश्यकताओं के अनुसार होता है न कि केवल धनी व्यक्तियों की आवश्यकता के अनुसार इसलिए समाज की वास्तविक आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाती है और मूलभूत आवश्यक वस्तुओं की पूर्ति सामान्य कीमतों पर की जाती है।
- **आय तथा धन का समान वितरण**—समाजवादी अर्थव्यवस्था में आय तथा धन का वितरण समान होता है।

समाजवादी अर्थव्यवस्था की हानियाँ—समाजवादी अर्थव्यवस्था की मुख्य हानियाँ इस प्रकार हैं—

- **लागत की गलत गणना**—समाजवादी प्रणाली में, संसाधन सरकार के पास होते हैं। सरकार संसाधनों तथा सेवाओं की कीमत की सही गणना नहीं कर सकती।
- **तानाशाही प्रणाली**—समाजवादी प्रणाली में तानाशाही होती है और एक तानाशाह व्यवस्था व व्यावसायिक इकाइयों को कुशलता से नहीं चला सकता, क्योंकि उनमें प्रोत्साहन की कमी होती है साथ ही अर्थशास्त्र तथा प्रबंधन में आवश्यक प्रशिक्षण की कमी होती है। चूँकि समाजवाद में उत्पादकर्ताओं को किसी भी प्रकार की प्रतियोगिता का सामना नहीं करना पड़ता। इसलिए वे अकुशल ढंग से कार्य करते हैं।
- **सरकार के हाथों में शक्ति का केंद्रीकरण**—स्पष्ट है कि जहाँ कहीं भी शक्ति एक प्राधिकरण के पास होती है वहाँ भ्रष्टाचार अवश्य होता है।

मिश्रित अर्थव्यवस्था

सोवियत संघ में समाजवादी अर्थव्यवस्था को अपनाया गया है। वहां उत्पादन के सभी साधनों पर सरकार का स्वामित्व है तथा वहां कोई निजी सम्पत्ति नहीं है। इसे भारतीय लोकतंत्र पर लागू करना संभव नहीं था, क्योंकि भूमि तथा अन्य सम्पत्तियों पर स्वामित्व के चलन को नहीं बदला जा सकता। इसलिए भारत में सोवियत संघ जैसा समाजवाद अपनाना संभव नहीं है। पंडित जवाहरलाल नेहरू एवं अन्य नेताओं तथा विचारकों ने पूर्ण पूँजीवादी एवं पूर्ण समाजवाद के अतिरिक्त एक अन्य रास्ता निकाला, जिसे मिश्रित अर्थव्यवस्था का नाम दिया गया है।

अर्थ एवं विशेषताएँ—वे अर्थव्यवस्थाएँ जिनमें पूँजीवादी एवं समाजवादी दोनों अर्थव्यवस्थाओं के तत्व उपस्थित होते हैं, मिश्रित अर्थव्यवस्थाएँ कहलाती हैं। भारत एक मिश्रित अर्थव्यवस्था वाला देश है। मिश्रित अर्थव्यवस्था की मुख्य विशेषताएँ इस प्रकार हैं—

- भूमि का स्वामित्व निजी तथा सार्वजनिक दोनों क्षेत्रों का होता है।
- इसमें निजी क्षेत्रों के उद्यमों को स्वतंत्रता होती है तथा सार्वजनिक क्षेत्रों के उद्यमों को कोई स्वतंत्रता नहीं होती।
- निजी क्षेत्र लाभ अर्जन के उद्देश्य से काम करते हैं जबकि सार्वजनिक क्षेत्र समाज कल्याण के लिए काम करते हैं।
- निजी क्षेत्र में कीमत संयंत्र सभी समस्याओ का हल करता है जबकि सार्वजनिक क्षेत्र में सरकार उत्पादन संबंधी निर्णय लेती है।
- प्रतियोगिता निजी क्षेत्र तक सीमित रहती है।
- उपभोक्ता प्रभुसत्ता होती है।
- व्यावसायिक स्वतंत्रता होती है।
- आय में असमानता होती है।
- सार्वजनिक क्षेत्र में सरकार की पूर्ण भूमिका होती है तथा निजी क्षेत्र में सीमित भूमिका होती है। निजी क्षेत्र में कीमत संयंत्र मुख्य भूमिका निभाता है तथा यह निर्णय करता है कि क्या, कैसे और किसके लिए उत्पादन करना है। जबकि सार्वजनिक क्षेत्र में केंद्रीय नियोजन प्राधिकरण निर्णय करता है कि क्या, कैसे तथा किसके लिए उत्पादन करना है।

मिश्रित अर्थव्यवस्था के लाभ—मिश्रित अर्थव्यवस्था के निम्नलिखित लाभ हैं—

- यह निजी उत्साह तथा लाभार्जन को पूरा विस्तार प्रदान करती है।
- उद्यमों को स्वतंत्रता तथा कीमत संयंत्र को संसाधनों के आबंटन तथा उत्पादन में कुशलता को प्रभावित करने की अनुमति होती है।
- सार्वजनिक क्षेत्र में सामाजिक हित तथा कल्याण उद्देश्य स्वयं के हित तथा निजी लाभ में बदल जाते हैं।
- यह व्यवस्था आर्थिक विकास व नियोजन, विकास में स्थिरता तथा संतुलन प्रदान करती है।
- निजी तथा सार्वजनिक क्षेत्र में उपस्थित प्रतियोगिता से उत्पादकता अधिकतम हो जाती है।

- सार्वजनिक एवं निजी दोनों क्षेत्रों की उपस्थिति, बाजार आधारित एवं नियंत्रण आधारित दोनों अवस्थाओं के बीच की स्थिति प्रदान करती है।

मिश्रित अर्थव्यवस्था की हानियाँ—मिश्रित अर्थव्यवस्था की मुख्य हानियाँ इस प्रकार हैं—

- **राष्ट्रीयकरण का भय**—मिश्रित अर्थव्यवस्था की एक कड़ी आलोचना यह होती है कि वह दीर्घकाल तक मिश्रित नहीं रह सकती। सामान्यत: सार्वजनिक क्षेत्र इस सीमा तक विस्तृत हो जाते हैं कि निजी क्षेत्र को समाहित कर लेते हैं। मिश्रित अर्थव्यवस्था निजी क्षेत्र के उद्योगों को भी नियंत्रित नहीं कर सकती जो सरकारी पहुँच से बाहर है।
- **अकुशलता तथा भ्रष्टाचार**—मिश्रित अर्थव्यवस्था में लाल फीताशाही, उच्च डिग्री का भ्रष्टाचार तथा प्रतियोगिता की अनुपस्थिति जैसी विशेषताएं होती हैं। इससे आर्थिक विकास की गति धीमी होती है, बरबादी बढ़ती है तथा आर्थिक अकुशलता आती है।
- **आर्थिक शक्तियों का केंद्रीकरण**—मिश्रित अर्थव्यवस्था में बड़े-बड़े आधुनिक निगम स्थापित हो जाते हैं, जो छोटे उत्पादकों का शोषण करते हैं और इस प्रकार आर्थिक शक्तियाँ निजी हाथों, राजनीतिज्ञों तथा कुछ तानाशाहों के हाथों में सीमित हो जाती हैं।

आर्थिक संवृद्धि और आर्थिक विकास (Economic Growth and Development)

अर्थशास्त्र में एक लंबे समय तक प्रगति, संवृद्धि और विकास शब्दों का प्रयोग पर्यायवाची के रूप में होता रहा है। इनका वर्तमान प्रयोग 1960 से लेकर 1990 तक की अवधि के बीच विकसित हुआ है। इन शब्दों के अर्थ इस प्रकार हैं—

प्रगति—प्रगति आज अर्थशास्त्र की कोई विशेष अवधारणा नहीं है। इस शब्द का अर्थ काफी सामान्य है। प्रगति को हमेशा बेहतरी, बढ़ोतरी आदि के रूप में ही प्रयोग किया जाता है। देश, समाज, परिवार या फिर कोई भी क्षेत्र सभी प्रगति कर सकते हैं। प्रगति कभी भी ऋणात्मक रूप में प्रयुक्त नही होती, यह हमेशा धनात्मक मूल्य से प्रेरित होती है। इस प्रकार धनात्मक आर्थिक संवृद्धि और आर्थिक विकास **प्रगति** के सूचक हैं।

संवृद्धि—संवृद्धि किसी व्यक्ति, समूह, क्षेत्र या देश में होने वाली मात्रात्मक प्रगति को कहते हैं। अर्थशास्त्री इसका प्रयोग अर्थव्यवस्था मे आने वाली मात्रात्मक प्रगति को दर्शाने के लिए करते हैं और यह हमेशा तुलनात्मक रूप से ही प्रयुक्त होता है। उदाहरण के तौर पर किसी देश की राष्ट्रीय आय का, सड़क की लंबाई का, इस्पात के उत्पादन इत्यादि की मात्रा (quantity) का पिछले वर्ष की तुलना में इस वर्ष बढ़ जाना ही आर्थिक संवृद्धि है—'मात्रात्मक आर्थिक प्रगति ही आर्थिक संवृद्धि है'। आर्थिक संवृद्धि को माप तौल की परंपरागत प्रणालीयों के द्वारा मापा जा सकता है तथा यह धनात्मक या ऋणात्मक दोनों ही हो सकती है।

विकास—विकास शब्द मात्रा के साथ-साथ गुण का भी बोध कराता है। किसी व्यक्ति, समूह या देश की अर्थव्यवस्था में अगर आर्थिक विकास हो रहा है तो मात्रात्मक प्रगति के साथ-साथ वहां गुणात्मक प्रगति भी होती है- मात्रात्मक और गुणात्मक प्रगति का साथ-साथ होना ही विकास है। इसका अर्थ यह हुआ कि विकास में संवृद्धि समाहित है। अत: विकास, संवृद्धि से ज्यादा व्यापक अवधारणा है। जहां किसी देश के सकल उत्पादन (आय) का बढ़ना संवृद्धि दर्शाता है वहीं वहां शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवहन, सुरक्षा, रहन-सहन का स्तर आदि की बेहतरी उसके विकास का द्योतक है।

संवृद्धि विकास के लिए आवश्यक है

आर्थिक संवृद्धि एवं विकास के अंतर्सम्बन्धों के मद्देनजर हम यह कह सकते हैं कि आर्थिक विकास तभी संभव है जब संसाधनों की उपलब्धता में वृद्धि हो और संसाधनों की उपलब्धता में वृद्धि तभी संभव है जब आर्थिक संवृद्धि की स्थिति विद्यमान हो। लेकिन, इसका यह अर्थ नहीं है कि संवृद्धि अनिवार्य रूप से विकास की पृष्ठभूमि तैयार करती है या विकास के लिए उत्प्रेरक का कार्य करती है। आर्थिक संवृद्धि को आर्थिक विकास में तभी रूपांतरित किया जा सकता है जब आर्थिक संवृद्धि के लाभों का समाज में समतापूर्ण वितरण संभव हो। यह तब तक संभव नहीं, जब तक कि आर्थिक संवृद्धि की प्रकृति बहुआयामी न हो। आर्थिक संवृद्धि अर्थव्यवस्था के किसी क्षेत्र विशेष पर आधारित न होकर अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रकों मे संवृद्धि का परिणाम हो, विशेषकर उन क्षेत्रों मे तो अनिवार्य रूप से जिनमे देश की सर्वाधिक श्रमशक्ति संलग्न है।

आर्थिक संवृद्धि एवं आर्थिक विकास के जटिल अंतर्सम्बन्धों को समझने के लिए 1991 की आर्थिक उदारीकरण की प्रक्रिया को उदाहरणस्वरूप लिया जा सकता है। जब देश में 1991 मे आर्थिक उदारीकरण का सूत्रपात हुआ तो इस प्रक्रिया मे सर्वाधिक लाभ मुख्य रूप से औद्योगिक क्षेत्र और सीमित संदर्भों में सेवा क्षेत्र, विशेषकर सूचना प्रौद्योगिकी एवं संबद्ध सेवाओं को हुआ। इस क्रम मे कृषि क्षेत्र की सर्वाधिक उपेक्षा हुई जबकि देश की 60% से अधिक श्रमशक्ति इस क्षेत्र मे संलग्न थी। सेवा क्षेत्र का भी एक बड़ा हिस्सा उदारीकरण के सकारात्मक प्रभावों से अछूता ही रहा और इस क्षेत्र मे संलग्न श्रमशक्ति भी। यही कारण है कि आर्थिक उदारीकरण ने भारतीय अर्थव्यवस्था की संवृद्धि दर को तो बढ़ाने का काम किया परन्तु अपेक्षित आर्थिक विकास को प्राप्त करने मे असमर्थ रहा क्योंकि इस संवृद्धि ने अर्थव्यवस्था मे सामाजिक-आर्थिक विषमता के साथ-साथ आर्थिक विकास की दृष्टि से क्षेत्रीय विषमता को बढ़ाने का कार्य किया था। इस उदाहरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि जब तक संवृद्धि सभी क्षेत्रों के विकास मे सहायक नही होती तब तक संवृद्धि, विकास का पर्याय नहीं बन सकती। संक्षेप मे आर्थिक संवृद्धि और आर्थिक विकास के अंतर्संबंधों को निम्न परिप्रेक्ष्य मे देखा जा सकता है—

1. आर्थिक संवृद्धि आर्थिक विकास की पूर्व शर्त है। मतलब यह कि आर्थिक संवृद्धि के बिना आर्थिक विकास संभव नही है।
2. कोई जरूरी नही कि आर्थिक संवृद्धि अनिवार्य रूप से आर्थिक विकास में परिणत हो। जब तक आर्थिक संवृद्धि के लाभों का

समतापूर्वक वितरण होता रहेगा, आर्थिक संवृद्धि के साथ-साथ आर्थिक विकास होता रहेगा। जैसे ही आर्थिक संवृद्धि के लाभ समाज के एक छोटे समूह तक सिमटने लगेंगे, वैसे ही आर्थिक संवृद्धि के बावजूद विकास की प्रक्रिय बाधित होगी।

3. खुद आर्थिक विकास भी भविष्य में आर्थिक संवृद्धि की संभावनाओं को विस्तार देता है।

तालिका 1.1: पूँजीवादी, समाजवादी एवं मिश्रित अर्थव्यवस्थाओं में अन्तर

अन्तर के आधार	पूँजीवादी अर्थव्यवस्था	समाजवादी अर्थव्यवस्था	मिश्रित अर्थव्यवस्था
नियंत्रण	यह एक मुक्त अर्थव्यवस्था है।	यह एक नियंत्रित अर्थव्यवस्था है।	इसमें स्वतंत्रता एवं नियंत्रण दोनों साथ-साथ चलते हैं।
स्वामित्व	उत्पत्ति के साधनों पर निजी स्वामित्व होता है।	उत्पत्ति के साधनों पर सरकार का स्वामित्व होता है।	उत्पत्ति के साधनों पर स्वामित्व निजी एवं सरकारी दोनों प्रकार का होता है।
उद्देश्य	उत्पादन का उद्देश्य लाभ प्राप्त करना होता है।	उत्पादन का उद्देश्य सामाजिक कल्याण में वृद्धि करना होता है।	उत्पादन में निजी क्षेत्र का उद्देश्य लाभ कमाना और सार्वजनिक क्षेत्र का उद्देश्य सामाजिक कल्याण में अभिवृद्धि करना होता है।
अर्थव्यवस्था का संचालन	इसमें अर्थव्यवस्था का संचालन 'मूल्य तंत्र' द्वारा होता है।	इसमें 'मूल्य तंत्र' को नियमित एवं नियंत्रित किया जाता है।	इसमें 'दोहरी मूल्य नीति' अपनायी जाती है। अर्थात् कमजोर वर्ग के लिए अलग मूल्य नीति जबकि सामान्य व धनी वर्ग, बाजार आधारित मूल्य नीति का अनुसरण करते है।
प्रतियोगिता	इसमें स्वतंत्र गला-काट प्रतियोगिता पायी जाती है।	इसमें प्रतियोगिता का अभाव पाया जाता है।	इसमें स्वस्थ्य प्रतियोगिता होती है।
आय का वितरण	इसमें आय का वितरण असमान होता है।	इसमें आय का वितरण समान होता है।	इसमें आय का वितरण समान व असमान दोनों प्रकार का होता है।
संघर्ष	इसमें वर्ग संघर्ष होता है।	इसमें वर्ग संघर्ष नहीं होता है।	इसमें असंतोष व्याप्त रहता है।
उदाहरण	अमेरिका	रूस	भारत

अध्याय सार संग्रह

- आर्थिक प्रणाली के आधार पर सम्पूर्ण विश्व की अर्थव्यवस्थाओं को तीन भागों मे बांटा जा सकता है—(i) पूँजीवादी अर्थव्यवस्था (ii) समाजवादी अर्थव्यवस्था और (iii) मिश्रित अर्थव्यवस्था
- भारतीय अर्थव्यवस्था मिश्रित अर्थव्यवस्था का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है।
- मिश्रित अर्थव्यवस्था में निजी क्षेत्र लाभ के उद्देश्य से कार्य करते है जबकि सार्वजनिक क्षेत्र का उद्देश्य सामाजिक कल्याण में अभिवृद्धि करना है।
- मिश्रित अर्थव्यवस्था की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह न तो पूर्णत: पूँजीवाद पर आधारित है और न ही समाजवाद पर। यह दोनों ही व्यवस्थाओं के गुणों को अपनाकर मिश्रित अर्थव्यवस्था को विकसित करते हैं।
- आर्थिक संवृद्धि आर्थिक विकास की पूर्व शर्त है।
- आर्थिक विकास स्वयं भविष्य में आर्थिक संवृद्धि की संभावनाओं को विस्तार देता है।
- आर्थिक संवृद्धि एक मात्रात्मक संकल्पना है, जो सकारात्मक व नकारात्मक दोनों ही हो सकती है।
- आर्थिक विकास में 'मात्रा' व 'गुण' दोनों ही शामिल हैं और यह सदैव सकारात्मक होता है।